साझी विरासत
पुस्तिका सीरीज़—41

खड़िया लोकगीत

पहाड़ और धरती पर गाते लोग

भाग–२

संकलन
सिमडेगा के ग्रामीणों का समूह

सौजन्य
डॉ. रोज केरकेट्टा और उनकी टीम

प्रस्तावना
फैसल अनुराग

खड़िया लोकगीत (भाग-2)

प्रकाशक :
isd इंस्टीट्यूट फॉर सोशल डेमोक्रेसी
फ्लैट नम्बर-110, नम्बरदार हाउस,
62-ए, लक्ष्मी मार्केट, मुनिरका
नई दिल्ली-110067
टेलीफोन 011-26196356, टेलीफैक्स 011-26177904
ईमेल : notowar@rediffmail.com
वेबसाइट : isd.net.in

प्रकाशन वर्ष : 2011

केवल सीमित वितरण के लिए

साझी विरासत
पुस्तिका सीरीज़—41

खड़िया लोकगीत

पहाड़ और धरती पर गाते लोग

भाग–२

संकलन
सिमडेगा के ग्रामीणों का समूह

सौजन्य
डॉ. रोज केरकेट्टा और उनकी टीम

प्रस्तावना
फैसल अनुराग

सहयोग
प्रवीण कुमार

जंगलों में बजते मांदर उसके गीतों के निहितार्थ

यह दौर है जिसमें आदिवासियों के तमाम संसाधनों को छीन लेने की नीतियां प्रभावी हैं। विकास के जिस मॉडल के सहारे आधुनिकता का सपना गढ़ा गया है उसमें यदि आदिवासी समाज अपने को अलगाव में धकेला हुआ समझता है तो इसके कारणों को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता। सदियों से आदिवासी समाज अपनी सहजता को सहेजे रखने का संघर्ष कर रहा है। भारतीय संस्कृति की जब चर्चा की जाती है तो इसके आदिवासी दर्शन को न केवल हीन बता दिया जाता है बल्कि उसे चर्चा के काबिल भी नहीं माना जाता है। आदिवासी जनगण वास्तव में सांस्कृतिक न्याय के दीर्घकालिक संघर्ष को जारी रखे हुए हैं। आदिवासी लोकसाहित्य इस संघर्ष का ही दर्पण है। बात चाहे प्रकृति की हो या सामाजिक व्यवहार की, स्पष्ट महसूस किया जा सकता है कि आदिवासी दुनिया का नजरिया भिन्न है। भारतीय बहुलतावादी दर्शन के विकास में आदिवासी नज़रिए को अभी अपना स्थान प्राप्त करने के लिए लंबे और कठिन संघर्ष के दौर से गुजरना होगा। और जब तब भारत के आधिकारिक संस्थान आदिवासियों के साथ हुए, ऐतिहासिक अन्यायों की चर्चा करते हैं लेकिन इस अन्याय को खत्म कैसे किया जाए इसकी कोई रणनीति नहीं बनती है। वास्तव में भारतीय समाज और संस्कृति में आदिवासियों के योगदान की गंभीर विमर्श की जरूरत है। खास कर जब प्रकृति ही संकट में है तब आदिवासी नज़रिया राह दिखा सकता है।

तकनीक ने दुनिया के व्यवहारों और संस्कृति को गहरे रूप से प्रभावित किया है तो क्या इस तकनीक संचालित दुनिया में आदिवासी जीवन-पद्धति का कोई भविष्य नहीं है? इस सवाल का जबाव यह है कि चूंकि हम तकनीक को भी उसके प्राकृतिक विकास के संदर्भ में समझने में सफल नहीं हो पाते हैं इसलिए आदिवासियों की निरंतर विकासमान वैज्ञानिकता को खारिज कर देते हैं। इस स्थापना को बदलने की ज़रूरत है कि आदिवासी समाज एक पिछड़ा हुआ और गतिहीन समाज है। वास्तविकता यह है कि आदिवासियों के बीच निरंतर गतिशील आधुनिकता के अपने संदर्भ हैं तथा उनके गति संबंधी मानक भी अलग हैं। आदिवासी टाइम और स्पेस की अवधारणा भी अलग है। इसके दार्शनिक रूप को समझने के लिए अब भी आदिवासी लोकगीत हमें आधार देते हैं। आदिवासियों ने प्रकृति और मानवीय

सरोकार के बीच जो गहरा संवाद गढ़ा है उसमें ही अंतरनिहित है उनकी दार्शनिक चेतना। इस चेतना में जीवन बहुत सहज है। जटिलता के लिए इसमें बहुत गुंजाइश नहीं है लेकिन हर तरह के उलझन और जटिलता का हल निकाल लेने का उनका अपना तरीका है। इसे समझने के लिए मिथक और यथार्थ को देखने का प्रचलित नज़रिया बदलना होगा। साथ ही यह भी समझना होगा कि दुनिया भर के आदिवासियों के बीच प्रचलित अनेक सरोकार और सामाजिकता के बीच प्रकृति और उसकी गति एक अनिवार्य तत्व है जिसमें दोहन के लिए स्थान नहीं है तथा अतिरिक्त मूल्य पैदा करने की प्रतिस्पर्धा नहीं है। इन जनगणों ने सामुदायिकता और संपत्ति पर सामूहिक हक़ के साथ जेंडर न्याय को जरूरी सामाजिक सच्चाई बना रखा है। इनके जीवन में लोकतंत्र कोई थोपा हुआ राज्य संचालन का तरीका नहीं बल्कि जीवन जीने की पद्धति है। इसलिए आदिवासी जनगण निर्णय लेने के किसी व्यक्तिवादी रुझान का शिकार नहीं है। उसे कई बार व्यक्तिवाद समझ में नहीं आता और इसका ठोस कारण तो यह है कि व्यक्तिगत पूंजी के विकास की कोई अवधारणा समुदाय में नहीं है। इसका अर्थ यह नहीं है कि आदिवासी जनगण के बीच व्यक्तिगत पूंजी है ही नहीं। लेकिन यह अभी निर्माणाधीन प्रक्रिया में है और प्रचलित राजनीतिक मान्यताओं तथा विकास के वर्तमान तरीकों के कारण वह समाज में पहुंचने में सफल तो है लेकिन उसने अभी तक कोई लोक आधार नहीं तैयार किया है। इसके परिणाम के बतौर हम देख सकते हैं कि भारत के आदिवासी कॉरीडोर में विकास की अवधारणा के साथ उसके तरीकों को पुरजोर चुनौतियां दी जा रही हैं। यह प्रतिरोध न केवल प्राकृतिक है बल्कि इसे आरोपित भी नहीं किया गया है। इसलिए झारखंड के जनमानस में यह मान्यता दृढ़ है कि नेतृत्व भले ही धोखा दे दे और मुख्यधारा नाम की राजनीति में स्वयं को समाहित कर दे, आदिवासी अपने प्रतिरोध को तब तक जारी रखेंगे जब तक उनके नज़रिए को समझ कर स्थितियां बदल नहीं जातीं। इसे इस लोकमान्यता के आलोक में भी देखने की जरूरत है कि जब तक आदिवासी मांदर बजा कर नाचते रहेंगे और गाते रहेंगे उन्हें कोई समाप्त नहीं कर सकता। किसी भी समाज के इस गहरे लोकविश्वास के सामाजिक आधार को समझने की जरूरत है और इसके लिए मुख्यधारा के बारे में भी दृष्टिकोण बदलने की ज़रूरत है। वास्तव में भारत की वास्तविक मुख्यधारा के प्रस्थान तत्व को अब तक हाशिए के लायक भी नहीं समझा गया है। इसका कारण संस्कृति की उस वर्चस्ववादी मानसिकता में निहित है जो सबको समाहित कर लेना चाहती है लेकिन किसी अन्य के साथ बराबरी में चलने में विश्वास नहीं करती। आदिवासी जनगण

समानता के मूल्यों के साथ किसी भी समझौते के पक्षधर नहीं है। इसी कारण उनका सांस्कृतिक वर्चस्व और दर्पण के खिलाफ प्रतिरोध की सांस्कृतिक प्रक्रिया इतिहास के शुरुआत के साथ जारी है तथा वे किसी इतिहास के अंत की घोषणा के बर्खिलाफ इतिहास बनाने के सहभागी चेतना के संवाहक के बतौर अपने सहज लोकगीतों और लोककथाओं के साथ वैचारिक तौर पर दस्तक देते हैं। इन लोकगीतों में बहुत सहजता से लेकिन प्रकृति के बिम्बों के सहारे दार्शनिक विमर्श किया जाता है। हम प्रेम, राग और करुणा में इस विमर्श को महसूस कर सकते हैं। ज़रूरत केवल इस बात की है कि इसकी प्रक्रिया और प्रवृति को ऐतिहासिक विज्ञान के नज़रिए से देखा जाए। संस्कृतियों के बीच समानता के वैचारिक विमर्श की आदिवासी अवधारणा और जीवन पद्धति के बारे में आदर रखा जाए। अफ्रीका तथा दक्षिणी अमरीका के आदिवासी विमर्श ने राजनीतिक तौर पर स्थापित कर दिया है कि जिन्हें अंधविश्वास कह कर नकार दिया जाता था वह वास्तव में आदिवासी प्रतिरोध का तरीका था। जब उनकी भाषा और संस्कृति को छीनने का प्रयास किया जाता है तो प्रतिरोध के बहुत अलग तरीके वे ईजाद कर लेते हैं। भारत के आदिवासी कॉरीडोर में भी इसे देखा जा सकता है। झारखंड के हूलगुलानों का पूरा दर्शन ही इसी से निर्मित हुआ है और आदिवासी प्रतिरोध की परंपरा अब भी अक्षुण्ण है। बल्कि इस प्रतिरोध के संघर्षों ने पूरी औद्योगिक सभ्यता के खिलाफ ही जंग शुरू कर दी है। झारखंड के आदिवासी यदि पूरी ताक़त से यह कहते हैं कि हम ज़मीन का एक इंच भी किसी कंपनी को नहीं देंगे और उन्होंने ज़मीन न देने का उदाहरण भी प्रस्तुत किया है तो इसकी ताकत इतिहास और प्रकृति से उन्हें मिलती है। आदिवासी जनगण ने प्रतिरोध के जिन गीतों की रचना की है उसमें भी सहजता के ही विंब हैं। बिरसा मुंडा के नेतृत्व में हुए उलगुलान में भी इसी तरह के गीत गाए गए थे कि काली आंधी आयी है हमारी ज़मीन धूल की तरह उड़ रही है जागो और इस आंधी का मुकाबला करो। आज के प्रतिरोध आंदोलनों में भी कहा गया है कि हे सखी हमारे गांव कितने सुंदर है। नदियां कितनी मादक हैं। देखो सरई किस तरह हूल रही है। आओ इस सरई और सरजोम की हम हिफ़ाज़त करें। इस तरह के गीत राज्यसत्ता के लिए घातक नज़र आते हैं क्योंकि जिस सरजोम यानी साल के वृक्षों की रक्षा की बात की जा रही है उनके विनाश के बिना झारखंड में कॉरपोरेट घरानों के लिए जगह नहीं बन सकती।

इसलिए गीतों और संघर्ष के बीच एक गहरा संवाद है। यह संवाद अपनी खासियतों के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है। सांस्कृतिक तौर पर यह संघर्ष की उस चेतना का परिचायक है जो जनतंत्र में बहुलता के विमर्श को वास्तव में जीवंत

रखना चाहते हैं। समकालीन झारखंडी समाज जिस संकट व त्रासदी के दौर से गुज़र रहा है उसे विश्लेषित करने के लिए इतिहास की इस चेतना के रूबरू होना होगा। इससे संवाद स्थापित कर ही हम अपने समय में सांस्कृतिक अभिक्रम को समझ सकते हैं और व्यापक बदलाव की प्रक्रिया को भी तेज़ कर सकते है। सबसे बड़ी चुनौती समुन्नत झारखंड की नवरचना का है। क्या राजनीति की वर्तमान धारा इस मकसद को हासिल कर सकती है? हमें यह भी समझने की ज़रूरत है कि झारखंड आंदोलन के दौरान जिन सवालों को उठाया गया था सन् 2000 में राज्य बनने के बाद वे हाशिए पर क्यों चले गए और साथ ही झारखंड में जिस राजनीति की नींव पड़ी है वह अपने ही आधार तत्वों के निषेध पर क्यों खड़ी है? यह सवाल उठाया जा रहा है कि झारखंड एक विफल स्टेट है क्योंकि इसमें झारखंडियों के अरमान न केवल खत्म हो गए हैं बल्कि वे छल के शिकार हो गए हैं। इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता। दरअसल झारखंड आंदोलन के दौरान आंतरिक उपनिवेषवाद की चर्चा हुयी है लेकिन जो राजनीति राज्य गठन के बाद चली है उसने जनसंप्रभुता के सवाल को नज़रअंदाज कर दिया है। तो क्या यह मान लिया जाए कि झारखंड की यही नियति है? ऐसा मानना न केवल इतिहास के बारे में अपने अज्ञान को प्रकट करना होगा बल्कि उस सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत का अपमान भी होगा जिसे हूलगुलानों ने गढ़ा था। बिरसा मुंडा ने बार-बार ज़ोर देकर कहा था कि हूलगुलानों का अंत नहीं है।

झारखंड पर चर्चा करते समय विमर्श के अनेक पहलू सामने आते हैं। हूलगुलानों ने जिस परंपरा का सृजन किया उस पर हो रहे हमलों के बारे में विस्तार से विवेचना अनिवार्य है। झारखंड अनेक संस्कृतियों के संगम से निर्मित हुआ है। इस कारण बहुलतावादी विचार यहां पैदा हुए हैं और उन्होंने जनतंत्र के उन मानकों का भी सृजन किया है जो अनुकरण की प्रेरणा देते हैं। दरअसल आज के औद्योगिक विकास की अवधारणा को झारखंड में गंभीर चुनौती भी इसी कारण से मिल रही है। यह समुन्नति के नए आंदोलन का सूचक है। यह सिखाता है कि उत्पादन संबंध के साथ उत्पादन के तरीकों और उस पर नियंत्रण के बारे में नए तरीके से सोचा जाना चाहिए। व्यापक तौर पर देखा जाए तो मार्क्सवादी विचारकों ने भी आदिवासी इलाकों के बारे में विशिष्ट रणनीति बनाने पर ज़ोर दिया है। भारत के संविधान के निर्माण के समय भी यह सवाल उठा था। पांचवीं व छठी अनुसूची तथा नेहरू के विकास के आदिवासी क्षेत्र विषयक पंचशील की भी यही भावना है। इसे अमल में क्यों नहीं लाया गया यह जानना जरूरी है। झारखंड को समझने के लिए ज़रूरी है कि वर्ग के

साथ-साथ एथनिक नज़रिया भी अपनाया जाए। आदिवासी इलाके सामान्य इलाकों से संरचनाजन्य विशिष्टता के कारण ही अलग पहचान बनाते है। इस पहचान को खत्म करने के भयानक दुष्परिणामों से अवगत रहना चाहिए। झारखंडी समाज में एक ओर जहां सामंती प्रवृतियां कुछ इलाकों में मौजूद हैं तथा कुछ आधुनिक शहरों ने तकनीक समाज को जन्म दिया है। तो बड़ा भाग अभी भी अर्द्ध-आदिम है। इसका मतलब यह है कि इस समाज के दर्शन के पहलू बहुत अलग हैं। इसके बारे में गंभीरता और संजीदा हो कर जानने की जरूरत है। झारखंड राज्य बनने के बाद यदि झारखंडी अवधारणा राजनीति में हाशिए पर है तो वह जनांदोलनों के केंद्र में भी है। इस अंतर्विरोध को नकारने से हूलगुलानों ने जिस तरह के विचार का सृजन किया है। वह हमारी जन-राजनीति के बड़े संदर्भ की मांग करता है। झारखंडी जनसंप्रभुता व स्वशासन का यही संदर्भ है।

सामुदायिक जनतंत्र की पुनर्स्थापना झारखंड आंदोलन का सारतत्व है। जनता के सहजबोध इतिहास चेतना का हिस्सा और झारखंड क्षेत्र के दीर्घकालिक जनप्रतिरोध आंदोलनों से यह प्रेरणा प्राप्त होती है। झारखंड की यह साझा सांस्कृतिक विरासत है। यह विरासत जब तक जननिरंतरता में मौजूद है तब तक यह आंदोलन तमाम भटकावों, बिखरावों और गिरावटों की बाधाओं को तोड़ कर उठ खड़ा होता है। झारखंड के सांस्कृतिक जीवन का यह प्राणतत्व ही एक बार फिर इतिहास के वर्तमान गतिरोध को एक नया उफान दे रहा है। झारखंड आंदोलन की राजनीतिक चेतना पहली बार ज़मीनी देशज यथार्थ के बीच से नई पहचान हासिल कर रही है। देशज बोध की धारा सांस्कृतिक उलगुलान से शुरू हो रही है। संस्कृति का यह पहलू मानवीय जीवन की तमाम विशिष्टताओं की समरूपता है। अपनी विविधता के साथ झारखंड की पहचान का मतलब राजनीतिक दायरे के साथ आर्थिक मुद्दों की तलाश भी है। यह आंदोलन लंबे भटकाव के बाद एक स्थायी जनभागीदारी की निरंतरता के बीच गर्व से उठने के लिए तत्पर है। यह वक्त जबकि भारत बहुराष्ट्रीय निगमों तथा नव साम्राज्यवाद के शिकंजे में जकड़ता जा रहा है झारखंड जैसे पहचान आंदोलनों की जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है। यह संघर्ष केवल एक अलग राज्य की स्थापना तक सीमित नहीं है। यह नव साम्राज्यवाद के खिलाफ देशज स्वायत्तता का प्रतीक आंदोलन है। 1763 में जब ईस्ट इंडिया कंपनी को दीवानी मिली और अंग्रेजों ने भारत को गुलाम बनाने की प्रक्रिया शुरू की तो झारखंड क्षेत्र ने उसे निरंतर चुनौती दी। इस क्षेत्र की सांस्कृतिक विशिष्टता का यह पहलू है कि इसने कभी घुटने नहीं टेके। यहां के लोगों ने लड़कर आत्मसम्मान की रक्षा की। 1763 से लेकर 1947 तक एक

भी दशक ऐसा नहीं जबकि झारखंडी जनता ने स्वशासन का उलगुलान नहीं खड़ा किया और लहू से अपने गौरवपूर्ण इतिहास की रचना नहीं की। झारखंड का इतिहास और साहित्य आज भी जनता के लिए अध्ययन और लेखन का विषय नहीं बल्कि निर्माण प्रक्रिया है। नवसाम्राज्यवाद के खिलाफ भी यह क्षेत्र उठ खड़ा हुआ है। विस्थापन विरोध का सवाल हो अथवा स्वशासन की मांग एवं साम्राज्यवाद के खिलाफ यह संघर्ष निरंतर गतिशील है। एक ध्रुवीय विश्व के खिलाफ, साम्राज्यवाद के विभिन्न शोषणों के प्रतिरोध में, सांप्रदायिकता के विरुद्ध तथा समाजवाद की रचना झारखंडी चेतना का हिस्सा है। यह आज नई गति और तत्परता से विकासमान है। जन हक़ का सवाल भारतीय गणराज्य में सामुदायिक जनतंत्र की बहस उठा रहा है।

अमिल्कर कबराल ने ठीक ही कहा है 'इतिहास हमें बताता है कि कुछ खास परिस्थितियों में विदेशियों के लिए जनता पर अपना प्रभुत्व करना बहुत आसान है लेकिन इतिहास से ही हमें यह भी शिक्षा मिलती है। इस प्रभुत्व के भौतिक पहलू चाहे जो भी हों इसको बरकरार तभी रखा जा सकता है जब गुलाम बनाई गयी जनता के सांस्कृतिक जीवन का स्थायी तौर और संगठित रूप से दमन किया जाए। उपनिवेशवाद चाहे वह आंतरिक हो या ब्राह्य झारखंड के इस सांस्कृतिक जीवन को नष्ट नहीं कर पाया है। इसी से एक नए भारत के लिए नए झारखंड, शहीद शंकर गुहा नियोगी का नारा था 'नए भारत के लिए नया छत्तीसगढ़' की चेतना विस्तारित हो रही है। झारखंड आंदोलन अपने सांस्कृतिक जीवन के विशिष्ट पहलुओं को नए रूप से सुदृढ़ बनाने के लिए सचेष्ट है। स्वशासन का पहलू इसका आधार है। भारत के नवउपनिवेशवाद के खिलाफ पैदा हो रही चेतना का यह क्षेत्रीय आधार है। झारखंड की जातीय पहचान विस्तृत भारतीय अस्मिता के लिए एक विशिष्ट पहलू है। भारत में सामूहिक एवं सामुदायिक अधिकार का पारंपरिक मूल्य तभी मुख्यधारा का प्रधान पहलू बन सकता है जब झारखंड अपनी मंज़िल प्राप्त कर ले। अर्थात् वह सामुदायिक जनतंत्र का दरवाजा खोल दे और भारतीय गणतंत्र इस विशिष्टता के सहारे अपनी संप्रभुता को और मज़बूत बनाए अर्थात् स्वतंत्रता संग्राम से उभरे हुए मूल्य और चिंतन-बहस का केन्द्रीय आधार बने।

क्षेत्रीयता से पैदा हुई विशिष्टता और दूसरी ओर क्षेत्रीयता के बाहर के प्रभावों से निरंतर संघर्ष के कारण पैदा हुई गतिशीलता बदलाव और संग्रहणीयता अर्थात् द्वन्द्वात्मकता की विविधता झारखंडी संस्कृति का यह मूलाधार है जो भारतीय संस्कृति की विविधता का एक महत्वपूर्ण आयाम है। झारखंड आंदोलन को परिवर्तन की चेतना के रूप में ही विश्लेषित किया जा सकता है। यह तथ्य तब और पुष्ट हो जाता

है जब हम इतिहास में देखते हैं कि बार-बार गिरावट और भटकाव के बाद भी इस आंदोलन की केन्द्रीय चेतना कभी नष्ट नहीं होती बल्कि वह हर बार नए आदर्श और नई ताज़गी के साथ उठ खड़ी होती है। झारखंड की जनता की निराशा और धोखा अपने प्राकृतिक साहचर्य के साथ नई गतिशीलता हासिल कर लेती है। झारखंड की पहचान यही है। आजादी के बाद इस आंदोलन को राजनीति के भूल-भूलैये में जब कभी उलझाने की कोशिश की गयी, इतिहासबोध जन-सैलाब के रूप में विस्तार पा गया और झारखंडी समाज ने अपनी स्वाभाविक उत्सवधर्मिता से एक नई दिशा में अभियान तेज कर दिया।

इसीलिए झारखंड जन समुदाय अपनी विशिष्ट अर्थव्यवस्था, राजनीति और संस्कृति के लिए सचेष्ट रहा है। झारखंडी आत्मनिर्णय की बात एक बहुसांस्कृतिक गणराज्य की स्वायत्तता से संबद्ध है। यह अलगाववादी नहीं है, यह भारतीय संघ की आंतरिक शक्ति का स्रोत है। इसमें आत्मनियमन की भावना गूंजती है तथा एक नए युग की सामुदायिकता की झलक इसमें दिखती है। यही कारण है कि झारखंड के इतिहास में निहित सृजनात्मक पहल को सामुदायिक आधार पर ही परिभाषित किया जा सकता है। इसी परिभाषा से स्थानीय संसाधनों पर जनता के वास्तविक नियंत्रण का सवाल उठता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में इस सवाल का महत्व क्या है क्योंकि पूरा भारतीय संघ क्षेत्रीय अस्मिताओं की बहुरंगी संस्कृति की पहचान की मांग से आंदोलित है। भारतीय संघ में अलग राज्य आंदोलनों की एक नई फिज़ां बनी हुई है। झारखंड इसमें सबसे पुराना तथा विशिष्ट भी है क्योंकि झारखंड की चेतना सार्वदेशिक वास्तविकताओं की क्षेत्रीय अभिव्यक्ति है। यह नवउपनिवेश के लिए चुनौती है और आंतरिक विकास असंतुलन के लिए खतरे की घंटी। यह एक राजनीतिक संस्कृति की वकालत है तथा सामुदायिक जीवन दृष्टि का प्रतीक। यह विकास नीति के विकल्प की आधार भूमि है तथा सारी दुनिया में स्थानीय संसाधनों पर स्थानीय जन हक की मांग की प्राथमिक चेतना। झारखंड का इतिहास और समाजशास्त्र अध्ययन के नए तौर-तरीकों की मांग करता है। देशजबोध का यह नायाब केन्द्र है। इसका कारण यह है कि मानव समुदायों के बीच संप्रेषण संस्कृति के विकास की प्रक्रिया और उसका आधार भी है। बार-बार एक ही तरह की क्रियाएं करते रहने से एक खास तरह की गति, लय, आदत, प्रवृत्ति, अनुभव और ज्ञान का निर्माण होता है। झारखंडी समाज के मौखिक साहित्य में इस प्रक्रिया को देखा जा सकता है। भारत की कुल 427 आदिवासी जातियों में से 43 आदिवासी समूह झारखंड में रहते हैं। इनसे मिलते-जुलते सदान समूह भी हैं। इन सब की गति, लय,

आदत, प्रवृत्ति, अनुभव, ज्ञान, गीत और संगीत में समानता तो है ही। उपनिवेशवादी प्रतिरोध में भी रचनाशील एकता है। झारखंड की जनव्यापी कार्यवाहियों का स्वरूप शुरू से ही राजनीतिक होने के साथ-साथ आर्थिक भी था। झारखंड आंदोलन जनतांत्रिक भावना का अन्यतम उदाहरण है जिसने प्रभुत्वकाल में साम्राज्यवाद, अर्द्ध सामंतवाद तथा विकासशील पूंजीवाद का सार्थक प्रतिरोध किया। हालांकि जनचेतना का यह रूप राजनीतिक परिदृश्य में पूरी तरह अभिव्यक्त नहीं हो पाया लेकिन सारतत्व में यह चेतना निरंतरता में मौजूद रही है।

झारखंडी जातीयता की पहचान के लिए आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संघर्ष तो हुआ लेकिन इस प्रक्रिया के फलस्वरूप जो पहचान उभरी है उसने सत्ता की बागडोर को अत्यंत दयनीय बना रखा है। साथ ही सत्ता वर्ग की राजनीति पर उस अभिजात वर्ग का कब्जा है जिसका देशज निर्माण नहीं हुआ है और जिसके यूरोपीय आकाओं के बारे में ज्यां पाल सात्र ने कहा था ''उसने संवैधानिक सम्मेलनों के अंत में एक वक्तव्य पर हस्ताक्षर कर दिए। गुलामी के औपनिवेशिक आर्थिक ढांचे में कोई परिवर्तन नहीं होगा.'' हम देख ही रहे हैं कि आदिवासी क्षेत्र की जनता की आकांक्षा स्वशासी गांव व्यवस्था है और विस्थापन मूलक विकास नीति की पूरी तरह समाप्ति। लेकिन झारखंड के शासक वर्ग के अधिकांश प्रभावी दलों में इसे लेकर कोई चेतना नहीं है। वास्तव में साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष के कारण विकसित और उस संघर्ष से ही चरित्र ग्रहण करने वाली राष्ट्रीय देशभक्तिपूर्ण संस्कृति की मौजूदगी का यह अस्वीकार है। आदिवासी झारखंडी किसान ही सही अर्थों में आधुनिक संस्कृति के आधार और इसके निर्माता हैं, क्योंकि औपनिवेशिक और नव-औपनिवेशिक सभी चरणों में इन्होंने निरंतर अपने आपको पश्चिमी बुर्जुआ मूल्यों और दृष्टिकोणों के गर्म सलाखों से दागे जाने का विरोध किया। झारखंड का वर्तमान नेतृत्व फाइनन की इस चेतना को जानता नहीं है कि ''अगर हम अपनी जनता की आकांक्षाओं के अनुरूप बनना चाहते हैं तो हमें यूरोप के बजाय अपने देशज सकारात्मक रुख की तलाश करनी चाहिए।''

इस संघर्ष को प्रस्तुत करने में डॉ. रोज केरकेट्टा और उनके सहयोगियों की अह्म भूमिका है। उम्मीद है कि आदिवासी लोकगीतों को इन्हीं व्यापक अर्थों में देखा-पढ़ा जाएगा।

—फैसल अनुराग

खड़िया लोकगीत

पहाड़ और धरती पर गाते लोग

1. 1. ऊ उसलोओ ते मा जोई कोस,
उसलोओ ते बेतोड, उसलोओ ते गोनोएजो।
2. हानपुर ते अपा जोई जिनगी लेरेए,
रूंगुम अपा जोई।

2. इना नो डेलकिम जीयोम इनानो डेलकिम रे
बिडलोओ जो जरेकि
रोवा तेजी तिजो ञोखोओ।
इनानो डेलकिम जीयोम इनानो
इनानो डेलकिम रे।
कोसु रंगा बेतोड...।

3. 1. बंगसिङ घाटअ गुड़ाही तमकु
ञोओना उडनाबोङ खुउडोमकि
हायरे मरदानाइञ खुउडोमकि।
2. आय से कुलम, आय से कुलमडाय
मरदा नाइञ ञोओना उडना बोङ खुउडोमतज।

4. 1. पिरीति दुलार नाइञ को
मुसा तयगा मेलयटुयोब रे
2. भला अबुगा गुनायेम रे अम
अबुगा कीनोडेम रे अमअ थोङ
जोड़ी कुइना।

1. 1. इस धरती पर माँ दुःख
इस धरती पर भूख, इस धरती पर मृत्यु है।
2. स्वर्ग में पिताजी हमेशा खुशी
हर्ष है पिताजी।

2. क्यों मेरे आत्मा यहाँ आया क्यों आया
बीमारी, भूख सहने के लिए आया।
खेत में बुना हुआ धान सूख गया
रोपा गया धान को भी कीड़ा खाया
क्यों मेरे आत्मा यहाँ आया क्यों आया।
बीमारी, भूख सहने के लिए आया...।

3. 1. बंगसि घाट का तम्बाकू-गुड़ाखू
खाने-पीने से खाँसी हुआ
मेरे पति को खाँसी हुआ।
2. आओ बड़े दादा आओ मेरी गोतनी,
मेरे पति खाने-पीने से खाँस रहा है।

4. 1. मेरे प्यार तुमने आज से ही
मुझे छोड़ दिया।
2. तुम हमारे बारे में मत सोचना
तुम मत पछताना तुम्हारे लिए दूसरा
साथी मिलेगा।

5. 1. बेतोड डअ बेतोड डअ बेहर तेरे रे
जीयोम डअ, सांगो अवकिनङ रे।
2. सांगो इञअ धोम जो,
रूपल बयकम।

6. 1. ओम्पय डीपा कदम लोंगोय ते,
सांगो नाइञ को तिरी री री, तिरी री री
बाँसरी गअ रोओ पेड़्ते।
हायरे सांगोनाइञ अता दिनों कोलयोनानङ,
2. ञोओञोओ तिइबोङ झेनतु गोलते
चेंकोओ तिइ बोङ रोमोड डअ जोड़ते,
हायरे सांगोनाइञ अता दिनों कोलयोनानङ।

7. 1. ओले से रे मा जोई मोइञ चेपुड रूमकुब
तुम्बा ते सजायिञ,
हञ को चोनाइञ बसाली
गाय गुपा चोनाइञ
2. ओले से अपरजोई, जडजड कोंडेज,
जडजड बसुला
इञ को चोनाइञ तोंडेङ किनिर
बसाली गोय गुपा चोनाइञ।

5. 1. प्यास! प्यास! कौन देगा जीवन जल,
हम लोग, साथ थे।
2. साथी तुम मेरे लिए भी
रूमाल बना देना।

6. 1. नदी के उस पर कदम पेड़ की छाया में।
मेरी साथी तिरी री री तिरी री री
बंसुरी बजाता है।
मेरे साथी किस दिन हम लोग एक-दूसरे को देखेंगे।
2. दाहिने हाथ से चटाई बनाती है
बायें हाथ से आंसू पोछती है
अरे साथी किस दिन हम लोग एक-दूसरे को देखेंगे।

7. 1. दो माँ एक मुट्ठी चावल
मैं इससे धरमर में डालूंगा
मैं तो गाय चराने जाऊंगा
2. दो पिताजी तेज धार वाला कुल्हाड़ी
तेज धार वाला बसुला
मैं तो जाऊंगा छने जंगल में
गाय चराने जाऊंगा।

8. 1. ओले से रे मा जोई मोइञ चेपुड रूमकुब
तुम्बा ते सजायिञ,
इञ को चोनाइञ सांगो लमलम गअ चोनाइञ।
2. ओले सेरे अपा जोई मोइज चेपुड ढेबुआ,
इञ को चोनाइञ सांगो लमलम गारोः चोनाइञ
3. ओले सेरे माजोई मोइञ चेपुड ढेबुवा
इञ को चोनाइञ डिसअ राजी, सांगो
लमना चोनाइञ।

9. 1. किनभरअ तपकर दय तो
डेबना रो योये सेरे मा जोई
कौवअ जो उम डामता, मैना जो उम
डामता, हिन राइज ते तेरोब नो रे मा जोई।
2. किनरमअ जरअ दरू ते
डेबना रो योये से बोहिन
किनभर नोम योता नो,
नहियर नोम योता नो उम्बोओ।

10. 1. गअढ़ा सितिल ते कीरोया
कोरोया कोरोया रअरअ सुन्दर
गअढ़ा पतर योता।
2. किनभरअ मोःझो ते कोरोया
कोरोया कोरोया रअरअ सुन्दर
किनभर पतर योता।

8. 1. दो माँ एक मुट्ठी चावल
मैं थरमस में रखूंगा
मैं तो साथी ढूंढ़ने जाऊंगा
2. दो पिताजी एक मुट्ठी ढेबुआ
मैं तो साथी ढूढ़ने जाऊंगा
3. दो माँ एक मुट्ठी ढेबुआ
मैं तो दूर देश साथी ढूंढ़ने
जाऊंगा।

9. 1. आंगन के बरगद पेड में चढ़कर देखो माँ
कौआ भी नहीं पहुँच पाती है
मैना भी नहीं पहुँच पाता है
वैसे देश में तुमने मेरी शादी करवायी
2. आंगन के बरगद पेड़ में
चढ़कर देखो बहन
तुम्हारा आंगन तो दिखता है लेकिन
तुम्हारा ननिहाल दिखता है कि नहीं।

10. 1. गड्ढ़ा के किनारे कोरोया
कोरोया कोरोया फूल सुन्दर
गडढ़ा प्रकाशमन दिखता है।
2. आंगन के बीच में कोरोया
कोरोया कोरोया फूल सुन्दर
आंगन प्रकाशमान दिखता है।

11. 1. डुरिब को बोई बेलोम तज
अना से बोई डुरिब रोओ ञओना।
2. गोरेज मेंयअ बेलोमसिइ
अना से बोई डुरिब रोओ ञओना।

12. 1. हायरे इञअ बोकेरिञ
इञ तेको अजी जुम गमते।
2. गोरेज मेंयअ बोकेरिञ
इञ तेकी अजी जुम गमते।

13. 1. हरे, हरे, डिंडा ददा, इ मेरे ददा
कंडय ओलेम।
2. तुडा को एकादसी, तुडा छोड़य
मयङअ रोओ ओलिञ।

14. 1. सेरिगा रामे कंड़यबोओ
ढिरि रिरि गमें मेरे सिरे रो ञोगेम।
2. झोड़िये, गिमे, कोयोये, तपागे
ढिरि-रिरि गमें भेरे सिरे रो ञोगेम।

15. 1. अतिज बोई अरमकि
होगअ ददा निगा लेखे योता।
2. मयकि ददा उमित्र ठकयते
होगअ ददा निगा लेखे योता।

11. 1. डुरिब तो माईयां पक रहा है।
चालो बेटी डुरिब खाने।
2. सुबह में डुरिब पका हुआ है।
चालो बेटी डुरिब खाने।

12. 1. हाय मेरे देवर
मुझे तो भाभी भी नहीं कहता है।
2. सुबह में मेरे देवर
मुझे तो भाभी भी नहीं कहता है।

13. 1. अरे मेरे कुंआरा बड़े भाई
कब आप पत्नी लायेंगे।
2. कल तो एकादशी है, कल छोड़कर
परसो लायेंगे।

14. 1. साल का फल चुनो बुढ़िया
बादल गरजेगा उस समय खाओगी।
2. पानी बरसेगा, हवा चलेगी, तूफान आयेगा
बादल गरजेगा उस समय खाओगी।

15. 1. कहाँ बेटी दामाद
वहाँ है दादा उरांव जैसा दिखता है।
2. दादा झूठ नहीं बोलती हूँ
वहाँ है दादा उरांव जैसा दिखता है।

16. 1. छडीकिम बोई कोनसेल
बेरअ ते बोई लेरेएना चोनम।
2. लेरेए कोनघेर कंडयं उनोओ
बेरअ ते बोई लेरेएना चोनम।

17. 1. डिंडा नो ओनोनबोओ कोनसेल
खोड़ी ते मेचेर-मेचेरगा चोलता।
2. डिंडा नो ओनोनबोओ कोनसेन ते
अबु गिलेम बोयो लेरेएना तेरेम।

18. 1. ओनोनबोओ कोनसेल ते
अबु गिलेम बोयो लेरेएना तेरेम।
2. अखिर को अमअ लेबुगा
अबु गिलेम बोयो लेरेएना तेरेम।

19. 1. हरे हरे डिंडा दादा सोरी सांगो दादा
मेलय रोओ टुयोओ।
2. इञ को दादा ढुकु चोनाइञ
सोरी सांगो दादा मेलय टुयोओ।

20. 1. मेरोम गुजाना गुपाना कोनथेड बझायोब
असकल गुड योता।
2. न लगे असकल, न लगे डुरगुड
किमिन नोमगअ जपअगा डेलता।

16. 1. तुम्हारा पति तुमको छोड़ दिया
माईया तुम किसके पास खुशी ढूढ़ने जाओगी।
2. तुम्हारा पति दूसरा शादी किया
माईया तुम किसके पास खुशी ढूढ़ने जाओगी।

17. 1. कुंआरी या शादीशुदा औरत
गाँव के बीच में मचलती चलती है।
2. कुंआरी या शादीशुदा औरत को
मत पीटना भाई खुश रहने देना।

18. 1. शादीशुदा औरत को
मत पीटना भाई खुश रहने देना।
आखिर वह तुम्हारा ही है
मत पीटना भाई खुश रहने देना।

19. 1. हाये कुअंरा दादा संग साथी को दादा
तुमने छोड़ दिया ।
2. मैं तो दादा मनपसंद शादी करूंगी
संग साथी को दादा तुमने छोड़ दिया।

20. 1. बकरी चराते-चराते पक्षी फंसाया
तीतर जैसा दिखता है।
2. तीतर नहीं है, बटेर नहीं है
तुम्हारी बहुत छपते आती है।

कुःढिंङ लहसुवा

21. 1. अना बोई दसंई योना - उमित्र
चोना दादा दसंई डाड़ ते तोबडअ आइज।
2. सीना लेखे जियोम आइज-रूपा
लेखे लुतुइ - उमित्र चोना ददा
दोसांई डांड़ ते तोबडअता।

22. 1. कोनोन मोनोन जोण्ढरा बाड़ी
सुरूम न लगे बइना, हो लेरेए
कोनघेर अडि हेके।
2. दियोम-पतर सलगाय - सुरूम न
लगे बइनी, हो लेरेए कोनघेर
अडि हेके।

23. 1. भंवरपहार गद्दी चोलता-हो
हायरे हाय भंवर पहार गद्दी चोलता।
2. अंजोर-अंजोर मन्देइरकार
कुंडब ते झांझ रे ए गोई राम
ए गोइराम जुवन बेटी लोरेगा
चोलता।

कसा कुःढ़िङ

24. 1. सारू बीरू ते सराहरा समेड़ी
सुसुङ-रूसुङ;
रावन गिधी खोता रे बेलोओ
रूसुङ-रूसुड़।। हयरे...
2. सांइढ़ जुंवेइट डोडकीन खोता बेलोओ
रूसुङ-रूसुङ;
मनोवा ते चेंगना बयोओ गे सजौनी
रूसुड़-रूसुड़। हयरे...

कु:ढिंङ लहसुवा

21. 1. चलो माईयां दोसंई देखने
नहीं जाऊँगी दादा दोसंई टांड़ में कीचड़ है।
2. सोना जैसा मेरा आत्मा है रूपा जैसा मेरा कपड़ा
नहीं जाऊंगी दादा
दोसंई टांड़ में कीचड़-कीचड़ लगता है।

22. 1. छोटा सा मकाई की बारी
चोर नहीं है बहन,
वो विधुर ही है।
2. बत्ती जलाओ,
चोर नहीं है बहन
वो विधुर ही है।

23. 1. भंवर पहाड़ में गद्दी जा रहा है।
हायरे हाय भंवर पहाड़ में गद्दी जा रहा है।
2. मंदर का आवाज सुनकर
पीछे में झांझ भी है गोईया
ए गोईया जवान लड़की
आनंदित होकर जाती है।

कसा कु:ढ़िङ

24. 1. सारू पहाड़ में हरा भरा
सेमल का पेड़
कितना सुन्दर
रावन गिद्ध घोसला बनाया
2. शायद पास लेकर घोसला बनाया
कितना सुन्दर
आदमी को मुर्गी बनाया रे साजनी
कितना सुन्दर

कुवारी-ठढ़िया

25. 1. मैना रे चेरेबेरे गंगई ते डोको
जोमसिई।
2. ओले से रे मा जोई इञअ कःकोमरे
मैना तारना इञ चोनाइञ।

26. 1. इनअ धड राजा बोकोब
कोयोब राजा दशरथ
इनअ घड़ जोगी बोनेकिम
राजा दसरथ। हयरे...
2. बेटा को कारने बोकोब
कोयाडोम राजा दसरथ
बेटा की कारने जोगी होयकिम
राजा दसरथ। हयरे...

27. 1. एन्देर बेसे ठोयोल-ठोयोल
ओम्पय ते लुरी काडोङ डेबता
(सरिकोल ते लुरी काडोङ डेबता)
एन्देर बेसे ठोयोल-ठोयोल।
2. पालकी बेलोओकि, साँड़ीत बेलोओकि
एन्देर बेसे ठोयोल-ठोयोल।

28. 1. हो होरे अंवरा दोरहो बेहर नो
तारोओ, मंजय काडोड़ अंवरा दोरहो।
चला हरी रे, हो हो रे धीरे रासे।
2. सातो झन गोतोनी, बोसो झन
अंवरा दोरहो; बेहर नो तारोओ
मंजाय काडोङ... उमड़ा दोरहो... चला रही...
3. तुता दोरहो ते कुमुनी, तोब्हलुङ ते
झिमरी रो माई - उमड़ा
दोरहो... बेहर नो तारोओ मंजाय
काडोड़... उमड़ा दोरहो... चला रही रे...

कुवारी-ठढ़िया

25. 1. मैना चेरेबेरे
गंगई में बैठी है।
2. लाओं माँ मेरा तीर धनुष
मैना को मारने मैं जाऊंगा

26. 1. किसलिए राजा का दिमाग पाये
राजा दशरथ
किसलिए जोगी बने
राजा दशरथ।
2. बेटा के कारण दिमाग पाये
राजा दशरथ
बेटी के कारण जोगी बने
राजा दशरथ।

27. 1. तैरते-तैरते नदी में
मछली चढ़ती है।
2. पालकी बिछाये, साड़ी बिछाये
तैरते-तैरते....

28. 1. हो होरे आपके बांध का
मछली किसने पकड़ा।
2. सात गोतनी,
बीस लोग आपके बांध का
हो होरे कौन मछली पकड़ा।।
3. नीचे खेत में कुमनी,
ऊपर खेत में किमरी
हो होरे आपके बांध का
मछली कौन पकड़ा

डोयोल जदुरा

29. 1. गुलैंची रअरअ लेखे-इधय
सुन्दर छैला गुलैंची रअरअ लेखे
चोलकनकि।
2. मायोङ ते चंदोवा-कोंको ते मुंगावा
इधय सुन्दर छैला चोलकनकी
गुलैंची रअरअ लेखे इघय सुन्दर
छैला चोलकनकी।

30. 1. पीयो रे पीयो हारा ते डोकोतम
पोयो भाई हारा ते अबु पिजेम।
2. कन्डेइर-कन्डेइर कमेम हरा ते अबु पिजेम
पीयो भाई हारा ते अबु पिजेम। हयरे...
3. सोने लगल हारा पीयो रूपे लगल हारा रे
पीयो भाई हारा ते अबु पिजेम। हयरे...

दसई लहसुया

31. 1. तुरीन गे संवारो... रिंगीचिंगी
दउड़ा बयकायेम गे संवारो
रिंगीचिंगी।
2. इञअ कुंडबसिंग ते तुरीन गे
संवारो रिंगीचिंगी
रिंगीचिंगी डलिया बयकायगोड़ेम
रे संवारो रिंगीचिंगी।

डोयोल जदुरा

29. 1. गुलेंची फूल के समान कैसा सुन्दर लड़का
गुलैंची फूल के समान
चला गया।
2. छाती में चंदवा गला में हार
कितना सुन्दर लड़का चला गया
गुलैंची फूल के समान लड़का
चला गया।

30. 1. पीयो रे पीयो डाली में बैठते हो
डाली को भाई मत तोड़ना।
2. डाली-डाली चलना
डाली को भाई मत तोड़ना
3. सोना जैसा हरा पीयो रूपा जैसा हरा पीयो
पीयो भाई डाली को मत तोड़ना।

दसई लहसुया

31. 1. तुरीन रे रंगगिरांग
डलिया बना देना।

2. मेरे घर के पीछे
तुरीन रे रंगबिरांग
डलिया बना देना।

बंदोइ ठढ़िया

32. 1. कोनोन-मोनोन कोन्डेंग बुदा
कन्डेइर ते अबु पिजना तेरेम।
2. किनकर तेरोओ सुतय लुतुई
बोकेर तेरोओ सुन्दरोम
केन्डोर तेरोओ झाड़ि रे सिंगार।

33. 1. नदियअ डिंडा बेटी इकुड उलमलिया
सोओलुई ते बेटी उनते तलक तमकु छैलअ घड।
2. नो छैला उड़ते, नो छैला ञोओते
सोओलुई ते बेटी उनते तलक तमकु छैलय घड।

करम लहसुवा

34. 1. केंओटा भाइया बड़ा उलमलिया
हायरे खोड़ी-खोड़ी गोलते भंवर जाल।
2. मेसोन जाल फेंकायोओ, बरसोन जाल फेंकायोओ
केंओटा हायरे, बझे कि घोंघो रो सेंवार।

35. 1. चंकोड़ा को जोरमेसिई, घुड़लोओ सितिल ते
हो चकोंड़ इछय सुन्दर ञुड़ते रे।
2. काडे से अजी जोइ लुहुर-लुपुर उलूई ते
हो सोओलुइ इघय सुन्दर ञुडते रे।

बंदोइ ठढ़िया

32. 1. छोटा-मोटा बांस डाली
डाली को मत टूटने देना।
2. सास दी कपड़ा
देवर दिया सिंदूर
पति दिया सारा कुछ सिंगार।

33. 1. नदी पास की लड़की कितनी सुन्दर
खोंसा में बेटी रखती है खैनी लड़का के लिए।
2. क्या लड़का पीता-खाता है
खोंसा में बेटी रखती है खैनी लड़का के लिए।

करम लहसुवा

34. 1. केंओटा भाई बड़ा मेहनती
हायरे गाँव-गाँव जाकर भंवर जल बनाता है।
2. एक बार जाल फेंका, दो बार जाल फेंका
केंओटा हायरे, घोंघा फंसा।

35. 1. गोबर गडढ़ा के किनारे चांकोड़ लगा है
हो चाकोड़ कितना सुन्दर है।
2. भाजी कांघी करो बाल को
हो बाल कितना सुन्दर है।

दुरङ

36. 1. तेलमिङ बेड़ा ते, कुरकुर कुरकुर ढुरेता
तारे से ददा जोइ रूतु डंडअ बुङ।
पैनी डंडअ बुङ
रूतु डंडअ बुङ पैनी डंडअ बुङ गा तारे से।
2. न लगे कुरकुर, न लगे तिलोइया गे नायो
किमि कुंडुउ ढुरेता,
किमिन कुंडुउ लोरेगा डेलता।

37. 1. हाय बनय झरकुल अतु पतरकीम
गोडझुङ ते लिसोय-लोसोय गा चोलतम।
2. लुवा जराः बोःते पतरकिम
मेंया ते लिसोय-लोसोय गा चोलतम।
3. हाय दादा अतु पतरकीम
गोरेज-मेंयअ लडा गा डेलतम...।

38. 1. चोना डेना कनखी-कनखी...
हायरे डञ ते को उम बेस लाःता...।
2. चोना उेना सीरी सांगो...
अवना को इकुड बेस लाःता
हायरे इञ ते को इकुड बेस लाःता।

दुरङ

36. 1. तेलनिंग के खेत में पंडूक बोलता है
मारो तो भईया डंडा से।
पैनी डंडा से
डंडा से रे पैनी डंडा से मारो।
2. पंडूक नहीं है तिलोइ नहीं है
बहुरानी बोलती है,
बहुरानी नाचते आती है।

37. 1. हाय बनय झाकुल तुम रात कहां बिताया
रास्ते में हिलते-डोलते जाते हो।
2. अंजीर पेड़ के नीचे रात बिताया।
सुबह में हिलते-डोलते जाते हो।
3. हाय बड़ा भाई कहाँ रात बिताया
सुबह में हंसते हुए आते हो।

38. 1. जाना आना अकेले-अकेले
मुझे तो अच्छा नहीं लगता है।
2. जाना आना संग सानी
मुझे तो बहुत अच्छा लगता है।

39. 1. टोन्टी बीरू ते ई कोन्थेड तोरोः ता
कोको पाको, पाको लेगा लामते।
2. गोरेज मेंयअ कोन्थेड
कोको पाको, पाको तेगा लामते।

40. 1. करम करम गमोब रे कोनसेल
करम लेरङ इघय रोः डामना रे।
2. सावन जो चोलकी, भादो जो चोलकी
कुवर लेरङ करमा-सुमेम रे।

41. 1. मनोवाकि को लुवा लुकु लेस
मेमोन-मेमोन, मेमोन-मेमोन जोरमेताकी।
2. दारू रअरअ गुड, मोकोः ताकी
हायरे मनोवा सोःबरे सोःबरे मोकोः ताको।

42. 1. अता सितिल ते सिलोःना चोनम रे तिरियो
तुम्बा ते नो डाः ओडमकामिञ।
2. बीरू सितिल ते सिलोःता चोनाइञ
तुम्बा ते नो डाः ओडम कायेम।

43. 1. हारे इञअ सांगोनाइञ, हारे इञअ सांगोनाइञ
अता बीरू ते ओलोङ सायते...रे।
2. हारे इञअ सांगोनाइञ, हारे इञअ सांगोनाइञ
करेगा बीरू ते ओलोञ सायते...रे।

44. 1. संड़क सितिल ते सिलोःना चोलकिम रे ददा जोई
ओहरे ददा लेखे कोयतम तोतो ने नोनो गमले
नोनो ते तोतो गमले, ददअ लेखे कोयतला।
2. संड़क सितिल ते कामुना चोलकिम रे अजीजोई
ओहरे अजिञ लेखे कोयतल घोड़ी लेंड़ी ते
गुड़ाही बायोःब, अजीयाः लेखे कोयतल।

39. 1. टोन्टी पहाड़ में कौन चिड़िया बोलती है।
महुआ का फल ढूढ़ता है।
2. सुबह में चिड़िया
महुआ का फल ढूढ़ता है।

40. 1. करमा करमा बोलती हो महिला
करमा का समय कैसे पहुंचेगा।
2. सावन चला गया, भादो भी चला गया
कुवर में करमा गड़ेंगे।

41. 1. आदमी लोग गुलर फल जैसे
जल्दी-जल्दी खत्म हो जाते हैं।
2. पेड़ के फूल जैसे खत्म हो जाते है
हायरे मानव जल्दी-जल्दी खत्म हो जाते हैं।

42. 1. किस तरफ हल चलाने जाओग सनम
थरमस में पानी पहुँचाने जाऊंगी।
2. पहाड़ के किनारे हल चलाने जाऊँगा
थरमस में तुम पानी पहुँचा देना।

43. 1. हायरे मेरे साथी, हायरे मेरे साथी
किस पहाड़ में घास काटता है।
2. हायरे मेरे साथी, हायरे मेरे साथी
पहाड़ के किनारे घास काटता है।

44. 1. सड़क के किनारे हल चलाने गया दादा
हो हो रे दादा के जैसा नासमझ बायां को दाहिना कहता है,
दाहिना को बायां कहता है दादा जैसा नासमझ।
2. सड़क के किनारे काम करने गई भाभी
हो हो रे भाभी जैसा नासमझ छोड़ी के
टट्री को गुड़ाखू कहती है भाभी जैसे नासमझ।

45. हाय रे इञअ डिंडा समय...
कोयो लेखे लेङ चोलतज,
उलुई जो पण्डु गोडकी
गोने जो जोरोम गोडकी
हायरे इञअ डिंडा समय
कोयो लेखे लेङ चोलकनकी।

46. 1. आयो बुङ जो अरबडुउ
बाबा बुङ जो टुरबडुउ
दादा जोई माञ बिता लुतुइ तेरोःब
नो रे ददा जोई
2. कोड़ी ते उम डालते, ञिरी ते उम डालते
मोरे बोकोब गेंधा रअरअ सोरवोइज
नो रे ददा भोरे कोंको गेंधा रअरअ सोखोइज।

47. 1. लुता खोड़ी ते रसमंडील एबोःताकी
इना ददा सोसरेइर डाँगोब रे। अनी...।
2. मुसा उमिञ चोना
तुडा जुमिञ चोना
मयंगअ ददा गोरेज गा
चोनाइञ रे...
अनी चोनानिङ धीरोम-धीरोम।

48. 1. कोनोन महा कदम दरू,
हरियारो कोलेःनाइञ।
2. रे कोलेःनाइञ सोने ढेलुवा झुलेता
रे कोलेःनाइञ रूपे ऐलुवा झुलेता।

45. हायरे मेरा कुंआरा समय...
हवा जैसा चला जा रहा है,
केश भी सफेद हो गया
दांत भी टूट गया
हायरे मेरा कुंआरा समय
हवा जैसा चला जा रहा है।

46. 1. माँ भी नहीं है
पिता भी नहीं है
दादाजी एक टुकड़ा कपड़ा दिया न रे
दादाजी।
2. कमर को नहीं ढंकता है, शरीर को नहीं ढंकता है
पूरे सिर में गेन्दा फूल लगाया, रे दादा जी
पूरे गला में गेन्दा फूल डाले।

47. 1. नीचे गाँव में रसमंडील खेलते हैं
क्यों दादा ससुराल भेजा।
चलो चलेंगे धीरे-धीरे...
2. आज नहीं जायेंगे
कल भी नहीं जायेंगे
परसों दादा सुबह ही जायेंगे।
चलो...

48. 1. छोटा बड़ा कदम पेड़
हायरे मेरा तोता
2. हायरे मेरा तोता झूला झूलता है
मेरा तोता झूला झूलता है।।

49. 1. मरअ नाइञ मरंअनाइञ, हरे मरअनाइञ
हरे मरअ अमअ झाइल उसलोओ जोओते,
2. हरे मरअ अमअ टिहुल अयुलखोरते।
मरअनाइञ मरअनाइञ हरे मरअनाइञ
ही मरअ इञअ कोसु बेर सम्भड़ाए,
हरे मरअ इञअ कोसु बेर योकाए।।

50. 1. राजा कुंवर आरेकी,
दीरोम-दीरोम राजी ते डोठोः।
2. गोरेज मेंयअ आरेकी
दीरोम-दीरोम राजी ते डोठोः।

51. मैना मैना रेमअतेम मैना अतु चोलकिम
अमअ थोङगा रे मैना हँसली
ओबढराय गोड़िञ अमअ थोङगा
अमअ थोङगा रे मैना
हँसली ओबढरायगोड़िञ अमअ थोङगा।

52. 1. आयोइञ को गमते, दियो-दियो
दियो-दियो, दियो-दियो बेटिञ डेनम।
2. अपाइञ को गमते, लेरङ-लेरङ
लेरङ-लेरङ, लेरङ-लेरङ बेटिञ डेनम।
3. अजिञ को गमतो, गोएजनम तेउजो
सिडनम तेउजो मुनु तेजो अबु डेनम।

49. 1. मेरा मोर मेरा मोर, हायरे मेरा मोर,
हायरे मोर तुम्हारा पंख धरती पर झालू लगाता है
हायरे मोर तुम्हारा...
2. मोर मेरा मोर, हायरे मेरा मोर
हायरे मोर मेरा बीमारी कौन सम्भालेगा
हायरे मोर मेरा बीमारी कौन देखेगा।

50. 1. राजा कुंवर आया
धीरे-धीरे राज्य ले गया।
2. सुबह में आया
धीरे-धीरे राज्य ले गया।

51. मैना रे मैना तुम कहाँ गया
तुम्हारे लिए ही मैना हंसकी बनवाऊंगा
तुम्हारे लिए, तुम्हारे लिए मैना पिंजिड़ा
तुम्हारे लिए ही मैना
हंसती बनवाऊंगा।

52. 1. माँ बोलती है रोज-रोज, रोज-रोज,
रोज-रोज बेटी आना।
2. पिताजी बोलता है महीने-महीने
महीने-महीने बेटी आना।
3. भाभी बोलती है, मर जाने पर भी,
खो जाने पर भी, सपने में भी मत आना।

53. हारे अमीन कुलम
गोएजलोः गोएजलोः सोरेङ सुमोः
गोएजलोः गोएजलोः सोरेङ सुमोः
डेलकिमोंय अमीन
एठोःकी डाँड़ अंकल
गोएजलोः गोएजलोः सिकरी
चलायोःकी
गोएजलोः-गोएजलोः सिकरी चलायोःकी।

54. राँची याः गोरा पलटन
डुरून्डा सहर ते छेका नो डोमकी।
होडुरून्डा सहर ते छेका नो डोमकी
महारानी चिठी लिखा डाङोः
डुरून्डा सहर ते छेका नो डोमकी।।

55. राँची याः कोनोन साहेब
अम ते कोबेसा लगय गोड़े।।
गाड़ी तय आरेकी
रो दूरबील बुङ योयोः
चाइ दरू कोनीनडुउ योता।।

56. हाय सेम्भो राजा हाय डकई रानी
अनी से चोनानिङ अतियाः राजी
अनियाः पुर को
डाः उसलोः जला जपिडपुर
अनी से चोनानिङ अनियाःपुर।।
हाय पोनोमोसोर, हाय गिड़िङ लेरङ
उतुनना मेरे उतुनोब
गमना मेरे गमोब
अनी से चोनानिङ अनियाः पुर।।

53. 1. हायरे अमीन
खेत, खेत पत्थर गाड़ा
खेत, खेत पत्थर गाड़ा
अमीन आये
टांड-खेत नापे
खेत, खेत चेन डाले
खेत, खेत चेन डाले।

54. रांची का गोरा सिपाही
डुरंडा शहर को घेरा।
हो डुरंडा शहर को घेरा
महारानी को चिट्ठी भेजा
डुरंडा शहर को घेर लिया है।

55. रांची का छोटा साहब
तुमको कुछ काम दे देगा।।
गाड़ी से उतर कर
दूरबीन से देखा
चाय का पेड़ छोटा सा दिखता है।

56. हाय सेम्मो राजा हाय डकई रानी
चलो तो अपना राज्य चलते हैं
पानी, धरती, डापिडपुर,
चलो तो चलेंगे अपना राज्य।
हाय कितना धूप
कहने समय कह दिया
बोलने समय बोल दिया
चलो तो चलेंगे, अपना राज्य।

***isd* इंस्टीट्यूट फॉर सोशल डेमोक्रेसी**

फ्लैट नम्बर-110, नम्बरदार हाउस,

62-ए, लक्ष्मी मार्केट, मुनिरका

नई दिल्ली-110067

टेलीफोन 011-26196356, टेलीफैक्स 011-26177904

ईमेल : notowar@rediffmail.com

केवल सीमित वितरण के लिए